राँची विश्वविद्यालय, राँची की पीएच० डी० उपाधि के लिए हिंदी विभाग , मानविकी संकाय में प्रस्तुत शोध – सार

शोध विषय

हिंदी राष्ट्रीय काव्यधारा की परंपरा में गोपाल सिंह 'नेपाली' का योगदान

शोध निर्देशक

डॉ. प्रशांत गौरव
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग,
गोस्सनर कॉलेज ,राँची
9430408221

शोधार्थी

प्रियंका भारती
एम.ए.,हिन्दी(नेट उत्तीर्ण)
राँची विश्वविद्यालय , राँची
चलभाष : 6200929136

वर्ष : 2024

सहमति पत्र

प्रियंका भारती, नेट – उत्तीर्ण (हिंदी) ने “ हिंदी राष्ट्रीय काव्यधारा की परंपरा में गोपाल सिंह ‘नेपाली’ का योगदान” विषय शीर्षक से मेरे निर्देशन में राँची विश्वविद्यालय, राँची से पीएच० डी० उपाधि के लिए शोध –कार्य सम्पन्न करने का संकल्प किया है। जहाँ तक मेरी जानकारी है, यह विषय सर्वथा मौलिक है और इस पर शोध -कार्य नहीं हुआ है। अतः मैं इनके शोध –कार्य में निर्देशन की सहर्ष सहमति प्रदान करता हूँ।

शोध- निर्देशक

डॉ. प्रशांत गौरव
सहायक प्राध्यापक,
गोस्सनर महाविद्यालय, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

प्रस्तावना

'राष्ट्रीय' शब्द का अर्थ आधुनिक संदर्भ के अनुरूप है जिसमें किसी विशेष जाति ,धर्म ,संप्रदाय ,सीमित भू-भाग आदि के स्थान पर एक समग्र संपूर्ण देश के रूप में स्थान दिया गया है | जहां पर किसी एक विशेष समुदाय का आधिपत्य न रहकर पूरे जन समुदाय का अधिकार है | भारत की सांस्कृतिक विविधता की विशेषता ही इसे नया सौष्ठव प्रदान करती है | यह ज्ञातव्य है कि अंग्रेजों के आगमन से पूर्व अपनी सांस्कृतिक एकता के बावजूद भारत व्यावहारिक रूप से भिन्न-भिन्न रूप से राज्यों में बंटा हुआ था | वास्तव में पूरे भारतवर्ष की एकता के अर्थ में राष्ट्रीयता का विकास आधुनिक युग में दिखाई पड़ता है | अंग्रेजों ने पूरे भारत पर एक साथ शासन स्थापित किया , जिससे पूरे देश के लोगों ने एक समान यातना का अनुभव किया | उन्हें यह समझ आ गया था कि वह किसी धर्म या जाति के हो पर वह अंग्रेजों के गुलाम है | इस शासन के विरुद्ध पूरे जनसमुदाय ने मुक्ति का अभियान शुरू किया | इस मुक्ति की चेतना ने लोगों के अन्दर राष्ट्रीयता की भावना जागृत की |

राष्ट्रीयता का विकास सबसे पहले पश्चिमी देशों में विशेषतः इंग्लैंड में शुरू हुआ | भारतीय राष्ट्रीयता में स्व-रक्षा का भाव प्रधान था जबकि स्वतंत्र पश्चिमी देशों में स्व-विकास का | भारत की प्राचीन संस्कृति की धरोहर इसे गौरवशील इतिहास प्रदान करती है इस धरोहर को लिखित एवं मौखिक रूप में जन-समुदाय को साझा करने का कार्य हिंदी भाषा ने किया है । पूरे जन-मानस में भारत की अखंडता एकता प्राचीन संस्कृति का इतिहास राष्ट्रीयता वैशिष्ट्य प्रदान करने में हिंदी भाषा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है |

भारत का पहला स्वाधीनता संग्राम सन् 1857 में हुआ था जिसे "सिपाही विद्रोह" भी कहा जाता है | यह विद्रोह कुछ कारण से असफल रहा है किंतु इस विद्रोह की आंधी ने पूरे जन-समुदाय को प्रभावित किया | इसका असर पूरे देश के संपूर्ण बौद्धिक जगत पर पड़ा था । भारत की राजनीतिक , सामाजिक , आर्थिक व्यवस्था में व्याप्त कुरीतियों का विरोध होने लगा । साथ ही साहित्य के क्षेत्र में भी उथल-पुथल देखने को मिला । आधुनिक काल में गद्य एवं पद्य दोनों ही विधाओं में नवीन शिल्प विधान में परिवर्तन हुआ । जिसमें दोनों ही विधाओं की भाषा खड़ी बोली हिंदी पर जोर दिया गया । कवि के विषय भक्ति , नीति , रीति से आगे बढ़कर देशहित की ओर अग्रसर हुई । इसमें देशहित , लोकहित , समाज-सुधार , मातृभाषा का उद्धार, देश के अतीत की गौरवगाथा का वर्णन , वर्तमान अधोगति की वेदना , भविष्य के प्रति चिंता आदि पुनीत भावों के साथ हिंदी में "राष्ट्रीय काव्यधारा" का उदय हुआ । मुख्य रूप से हिंदी में राष्ट्रीय काव्यधारा का आरंभ आधुनिक काल में भारतेंदु युग में हुआ ।

राष्ट्रीय काव्यधारा का जनक भारतेंदु हरिश्चंद्र को माना जाता है । भारतेंदु ने अपने काव्य की वाणी में राष्ट्रीयता का स्वर सबसे ऊंचा रखा था । इस काव्यधारा का सौष्ठव एवं गति प्रदान करने का अनुपम कार्य इसी काल में हुआ है । इस नवजागरण काल में काव्य की भाषा देश की बदलती हुई स्थिति के अनुरूप लाने में भारतेंदु मंडल की महत्वपूर्ण भूमिका रही है ।

भारतेंदु की 'विजयिनी विजय वैजयंती' , 'भारत-दुर्दशा' , 'नीलदेवी' , 'सतीप्रथा' , प्रतापनारायण मिश्र की 'बुढ़ापा' , 'गौरक्षा' , 'हरगंगा' , बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की 'आनंद अरुणोदय' , 'हार्दिक हर्षादर्श' , राधाकृष्णदास की 'भारतबारहमासा' आदि अनेक कवियों ने अपनी लेखनी के द्वारा भारत में व्याप्त सामाजिक विषमताओं , छुआछूत , बाल-विवाह , सती-प्रथा , शोषण का विरोध , आर्थिक संकट , अतीत का यशोगान , आजादी के प्रति उत्साह , देश के प्रति प्रेम एवं समर्पण का चित्रण किया है । भारतेंदु काल कविता को जन समुदाय के पास लाने का प्रयास किया गया है । इस संदर्भ के बारे में रामचंद्र शुक्ल का विचार उल्लेखनीय है

" प्रेम जगाया तो गया पर कुछ नया-नया सा होने के कारण उस समय काव्य भूमि पर पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित ना हो सका ।"

प्रथम उत्थान में जहां कविता को नया स्वरूप मिला वहीं द्वितीय उत्थान में उस स्वरूप को पल्लवित किया गया जिसे हम जागरण सुधारकाल भी कहते हैं । भारतेंदु में जहां राजभक्ति के साथ देशभक्ति की कविताओं का समन्वय मिलता है । वही इस युग में सिर्फ देशभक्ति से परिपूर्ण कविताओं का चित्रण मिलता है । इस काल में जन-समुदाय ने स्वतंत्रता की मांग को खुलकर व्यक्त किया । भाषा के स्तर पर सरस्वती पत्रिका की महत्ता अपरिहार्य है । सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन 1902 में बाबू श्याम सुंदर दास उसके बाद 1903 में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इसका संपादन किया । द्विवेदी युग में राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों में मैथिलीशरण गुप्त का अन्यतम स्थान है । मैथिलीशरण गुप्त की रचना "भारत भारती" 1912 उस दौर की महत्वपूर्ण रचना है । इस पर महात्मा गांधी ने उन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से सम्मानित किया था । इसमें सिर्फ अतीत के गौरव गान ही नहीं बल्कि समसामयिकी स्थिति का भी वर्णन मिलता है । 'जयद्रथ-वध' , 'साकेत' , 'पंचवटी' , 'द्वापर' , 'यशोधरा' आदि उस युग की महत्वपूर्ण कृति है । अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की 'प्रियप्रवास' , रायदेवीप्रसाद 'पूर्ण' की 'स्वदेशी कुंडल' , गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' की 'त्रिशूल तरंग' , 'राष्ट्रीय वीणा' आदि में राष्ट्रीय भक्ति के स्वर दिखाई पड़ते है । श्रीधर पाठक ने 'स्वच्छंदतावाद' काव्य धारा की नींव रखी जिसमें उन्होंने भाव एवं विचार को प्रकृति के नाना स्वरूपों के द्वारा चित्रण किया । 'गुनवंत हेमंत' में गांव का सजीव एवं मनमोहक चित्रण मिलता है ।

यूरोप में जहां टॉलस्टॉय की नीतियां देश को जगाने का कार्य कर रही है वहीं दूसरी तरफ भारत में भी गांधी जी सत्य और अहिंसा की नीति भारत की स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही थी । देश की सामाजिक , राजनीतिक , आर्थिक स्थिति में काफी उलट-फेर हुआ । इसका प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा । तृतीय उत्थान कल में काव्य में दो तरह के कवियों के भाव देखने को मिलते हैं । प्रथम भाव के कवियों ने भारत के आंतरिक विसंगतियों और विषमताओं को दूर करने के लिए देश का आवाहन किया वहीं दूसरी भाव के कवियों ने जनता को विदेशी शासन से मुक्ति दिलाने के लिए स्वयं ही इस लड़ाई में भाग लिया | जिसमें माखनलाल चतुर्वेदी , रामनरेश त्रिपाठी , बालकृष्ण शर्मा नवीन , सुभद्रा कुमारी चौहान ना केवल राष्ट्र प्रेम के गीत गाएं बल्कि स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में भाग भी लिया । इसमें माखनलाल चतुर्वेदी को राष्ट्रीय काव्यधारा को प्रणेता के रूप में माना जाता है । इस लड़ाई में कई बार उन्हें जेल भी जाना पड़ा । उनकी 'कैदी और कोकिला' शीर्षक कविता में इस यातना की पीड़ा को व्यक्त किया गया है -

" क्या देखन सकती जंजीरों का गहना ?
हथकड़ियाँ क्यों ? यह ब्रिटिश राज का गहना,
कोल्हू का चर्रक चूँ ? जीवन की तान
गिट्टियों पर अंगुलियों ने लिखे गान !
हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जुआ,
खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुआँ ।
दिन में करूणा क्यों जगे रुलाने वाली "

माखनलाल चतुर्वेदी की 'हमकिरीटनी', 'हिमतरंगिणी' , 'युगचारण' , 'समर्पण' , ' माता' , रामनरेश त्रिपाठी की 'मिलन', 'पथिक' , 'मानसी' , 'स्वप्न' , बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की 'कुमकुम' , 'उर्मिला' , 'अपलक', सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झांसी की रानी' इस काल की ओजपूर्ण एवं राष्ट्रीयता से परिपूर्ण कविताएं है ।

छायावाद काल में राष्ट्रीय काव्यधारा अपने सबसे सफल एवं समृद्ध दौर में थी जहां हर कवि ने राष्ट्रीयता से परिपूर्ण गीत गाएं हैं | छायावाद के प्रमुख कवियों ने अपनी कविताओं में एक तरफ जहाँ छायावाद प्रवृत्तियों संबंधित कविताएं लिखी वहीं दूसरी तरफ उन्होंने राष्ट्रीय जागरण से परिपूर्ण कविताएं लिखी | जिसमें 'अरुण ये मधुमय देश हमारा' (प्रसाद) , 'जागो एक बार ' (निराला) , 'यहाँ बनी हथकड़ियां राखी साखी है संसार'(नवीन) जैसे ओजपूर्ण कविताओं के साथ आम आदमी के स्वर को भी शामिल किया जाने लगा | छायावाद का महत्व इस दृष्टि से है कि उस युग में एक धर्मनिरपेक्ष समाज , आधुनिक और प्रतिरोधी राष्ट्रीय व्यक्तित्व की नींव रखी गयी साथ ही साथ आज़ादी की ज्योति पूरे जनसमुदाय में व्याप्त हो गयी |

साहित्य की धारा नदी की धारा के समान सदैव प्रवाहमान रहती है । इसीलिए साहित्य मानव जीवन की जीवंत घटनाओं को अभिव्यक्त करने में सक्षम है । भारतेंदु काल से तृतीय उत्थान तक राष्ट्रीय काव्यधारा की प्रवृत्तियां नवीन पथ पर अग्रसर हुई जिसमें नवीन बिम्ब एवं शैली का समावेश हुआ । छायावादोत्तर काल में अनेक काव्यधारा उभर कर सामने आई जिसमें राष्ट्रीय काव्यधारा के अलावा वैयक्तिक प्रगति कविता , प्रयोगवाद , प्रगतिवाद ,नई कविता , समकालीन कविता आदि । इस काल में कुछ कृतियों में एक से अधिक काव्यधारा का प्रभाव पड़ता है | ऐसा इसलिए क्योंकि साहित्यकार अपने परिवेश से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभावित होता रहता है जैसे निराला ,पंत की रचनाओं में छायावाद, प्रयोगवाद एवं प्रगतिवाद , उत्तर छायावाद काव्यधाराओं की प्रवृत्तियों का प्रभाव मिलता है । वैयक्तिक प्रगति कविता या वैयक्तिक गीतिकाव्य में हरिवंश राय बच्चन , नरेन्द्र शर्मा , भगवती चरण वर्मा , आरसी प्रसाद सिंह एवं गोपाल सिंह 'नेपाली' के काव्य में प्रेम की अनुभूति का चित्रण मिलता है जिसमें गोपाल सिंह 'नेपाली' के काव्य में प्रेम के साथ राष्ट्रीयता की गूँज सुनाई पड़ती है । साहित्यकार अपने भावों को किसी एक परिपाटी में बांधकर नहीं रख सकते हैं वह तो अनंत आसमान में विचरण करता है । उसी प्रकार गोपाल सिंह 'नेपाली' ने एक तरफ जहाँ प्रेम के गीत गाये वहीं दूसरी तरफ राष्ट्रीयता से परिपूर्ण कविताएं एवं गीत भी लिखे | 'नेपाली' ज़ी के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनकी कविताएं तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप समाविष्ट हो जाती है |

सुप्रसिद्ध कवि गीतकार गोपाल सिंह 'नेपाली' का जन्म 11 अगस्त 1911 को बिहार के बेतिया में हुआ था । उनका मूल नाम गोपाल बहादुर सिंह था । गोपाल सिंह 'नेपाली' हिंदी एवं 'नेपाली' भाषा के सुप्रसिद्ध कवि थे । उनकी कविताओं एवं गीत में तत्कालीन परिवेश की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप में परिलक्षित होती है । इसलिए इनकी कविताएं एवं गीत तत्कालीन समय में जनता में अत्यंत ही लोकप्रिय रहे हैं । उनकी रचनाओं में प्रेम के साथ राष्ट्रीय जागरण की अनुभूतियों का समावेश देखने को मिलता है । यही कारण है जो उनकी कविता एवं गीत को विशिष्ट बनाती है । देश के प्रति निश्छल प्रेम एवं समर्पण की भावना उनके गीतों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है | 'नेपाली' ने पत्रकार के रूप में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के साथ सुधा मासिक पत्र में , बाद में 'रतलाम टाइम्स' , 'पुण्य भूमि' तथा 'योग' के संपादकीय विभाग में काम किया । 'नेपाली' जी ने लगभग 400 से अधिक गीत लिखे और कुछ गीतों को फिल्मों में भी स्थान मिला । उन्हें "गीतों का राजकुमार" भी कहा जाता है । 'हिमालय ने पुकारा' में देश का यशोगान एवं प्रकृति सौंदर्य का सजीव चित्रण देखने को मिलता है । स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका अपरिहार्य है | ''नेपाली'' जी की कविताओं में राष्ट्र-प्रेम , प्रेम-सौंदर्य की अनुभूति का चित्रण मिलता है | 'नेपाली' ज़ी हिंदी भाषा के प्रबल समर्थक रहे हैं | 'पंत' , ' निराला' , ' प्रेमचंद' जैसे महान साहित्यकार इसी कारण 'नेपाली' जी को बहुत सम्मान एवं प्रेम देते हैं | 'पंत' के अनुसार "आपकी सरस्वती ने सहृदयता और सौंदर्य की सजीव प्रतिमा है" |

गोपाल सिंह 'नेपाली' उत्तरछायावाद के महत्वपूर्ण कवियों में एक है। नैसर्गिक सौंदर्य दृष्टि, उन्मुक्त प्रेम और वैविध्यपूर्ण रचनाशीलता के कारण 'नेपाली'ने 1934 -1973 तक लगातार अपनी गीत यात्रा के विभिन्न पड़ावों को रखांकित किया । प्रेम, राष्ट्रीयता और सौंदर्य के अनन्य गायक 'नेपाली' जी की पहचान प्रधान रूप से एक गीतकार के रूप में हुई ।

गोपाल सिंह 'नेपाली' की काव्य यात्रा 1931 से प्रारंभ हुई परंतु उनका प्रथम काव्य संग्रह उमंग 1934 में प्रकाशित हुआ ।उनके काव्य में राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति सर्वत्र दिखाई पड़ती है । परन्तु 1962 में हिंदी चीनी भाई-भाई यह कहता है चाउ एन लाई का नारा देने वाले चीन ने जब भारत पर आक्रमण किया तो पूरा देश क्षोभ से भर उठा । विश्वासघात के लिए चीनी को दोषी ठहराया गया| हिंदी के प्राय: सभी कवियों ने इस संकट की घड़ी में भारतीय जनमानस का आह्वान किया ।भारत की भव्यता एवं उच्चता के प्रतिमान हिमालय को संबोधित करते हुए अनेक कवियों ने राष्ट्रीय गीतों की रचना की ।

देश की स्वतंत्रता के लिए युवक-युवतियों को जागृत करते हुए भाई-बहन के रूप में 'नेपाली' ने उनका आह्वान किया है। नवयुवक भाई का अपनी बहन के प्रति कथन निम्नलिखित है-

"तू चिंगारी बनकर उड़ री, जागजाग मैं ज्वाल बनूँ-,
तू बन जा हहराती गँगा, मैं झेलम बेहाल बनूँ,
आज बसन्ती चोला तेरा, मैं भी सज लूँ लाल बनूँ,
तू भगिनी बन क्रान्ति कराली, मैं भाई विकराल बनूँ,
यहाँ न कोई राधारानी, वृन्दावन, बंशीवाला,
तू आँगन की ज्योति बहन री, मैं घर का पहरे वाला ।"

(भाई-बहन रागिनी पृष्ठ 61)

गोपाल सिंह 'नेपाली' ने मात्र 22 वर्ष की उम्र में सन 1933 में अपनी प्रथम रचना '**उमंग**' प्रकाशित की | उनकी मुख्य रचनाएं निम्न प्रकार से हैं-

'**उमंग**'(1933),'**रागिनी**'(1935),'**नीलिमा**'(1945), '**पंछी**'(1934), '**पंचमी**'(1942), '**हिमालय की पुकार**'(1963), '**सावन**', '**आंचल**', '**नवीन कल्पना करो**', '**रिमझिम**', '**बसंत गीत**', '**हमारी राष्ट्रीय वाणी**' , '**भारत गगन के जगमग सितारे**' आदि |

गोपाल सिंह 'नेपाली' के काव्य में प्रकृति के स्वरूपों और मनोहर रूपों का वर्णन के साथ देश के प्रति समर्पित प्रेम का सजीव चित्रण मिलता है | गोपाल सिंह 'नेपाली' के कविताओं में निराशा से जूझने का तथा शोषित के प्रति सहानुभूति का भाव परिलक्षित होता है |

हिंदी राष्ट्रीय काव्यधारा के विकास में गोपाल सिंह 'नेपाली' का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है| छायावादोत्तर काल में गोपाल सिंह 'नेपाली' ने अपने प्रेम दर्शन के साथ राष्ट्रीयता की गूंज से लोगों को इस तरह प्रभावित किया की हर जगह उनके देश प्रेम के गीत सुनाई देने लगे |

१९३६ के दौर में प्रगतिवाद काल में हिंदी राष्ट्रीय काव्यधारा की कविता को अधिक सफल रूप प्रदान करने के लिए जन आकांक्षाओं के सपनों के साथ जोड़ा जा रहा था | इस दौर में कवि कोरी कल्पना ना कर के मूल यथार्थ का चित्रण करता था | इस काल के कवियों पर मार्क्सवादी का अधिक प्रभाव परिलक्षित होता है| इस दौर के कवियों में रामधारी सिंह 'दिनकर' की 'कुरुक्षेत्र' , 'रश्मिरथी' , 'परशुराम की प्रतीक्षा' , नागार्जुन की 'युग धारा' , 'अकाल और उसके बाद, 'केदारनाथ अग्रवाल , शिवमंगल सिंह 'सुमन' आदि कवियों का महत्वपूर्ण स्थान है |

आजादी के बाद प्रयोगवाद, समकालीन कविता जैसे आंदोलन आरंभ हुए | इस दौड़ में राष्ट्रीय काव्यधारा की कविता परंपरागत राष्ट्रीयता के स्थान पर अलग विषयों की ओर मुड़ गई जिसमें तत्कालीन व्यवस्था के प्रति आक्रोश, पूंजीवादी व्यवस्था पर व्यंग्य, सामाजिकता का अधिक प्रभाव आदि का चित्रण मिलता है | इस दौर के कवियों में व्यवस्था के प्रति आक्रोश की प्रतिध्वनि सुनाई देती है |

भूमंडलीकरण के इस युग में साम्राज्यवादी शक्तियों के विरोध पर कई कवियों ने कविताएं लिखी | यह कविताएं राष्ट्रीय काव्यधारा की कविताओं से संबंधित है जिसमें भारतेंदु की उस भावना से जुड़ती है जिसमें कहा गया है कि हमारा धन विदेश चला जा रहा है | विदेशों में धन जाने की प्रवृत्ति , प्रतिभा के पलायन की प्रवृत्ति और बौद्धिक उपनिवेशवाद गंभीर रूप ले रहा है | इसका खुलासा निरंतन आज के कवि कर रहे है | निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि भारतेंदु से लेकर आज तक के उपनिवेशवाद काल तक राष्ट्रीय काव्यधारा की गूंज सुनाई पड़ती है | समय के अनुरूप इस राष्ट्रीय काव्यधारा में अनेक स्वरूपों का समाविष्ट हुआ किन्तु इसका उद्देश्य हमेशा राष्ट्रीयता की अलख की ज्योति को जलाना रहा है |

प्रस्तुत शोध – प्रबंध में हिंदी राष्ट्रीय काव्यधारा की परंपरा में गोपाल सिंह 'नेपाली' के योगदान एवं महत्ता को प्रतिपादित करने का प्रयास किया जाएगा | भारत की स्वतंत्रता यज्ञ में उनके इस अवदान और बलिदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता है |

शोध कार्य का उद्देश्य

मानव जीवन की हर क्रिया सोउद्देश्य होती है । व्यक्ति अपने जीवन के विविध आयामों की उपलब्धि के लिए एक कार्य प्रणाली बनाता है | यह कार्य प्रणाली उसे लक्ष्य प्राप्ति में सहायता प्रदान करती है । उसी प्रकार शोध कार्य का ध्येय सदैव ही निर्धारित रहता है ।

प्रस्तुत शोध में "हिंदी राष्ट्रीय काव्यधारा की परंपरा में गोपाल सिंह 'नेपाली' के योगदान में उनकी समस्त रचनाओं का अध्ययन करते हुए उनके कलात्मक एवं भावात्मक पक्षों को उजागर किया जाएगा | हिंदी राष्ट्रीय काव्यधारा के विकास में समस्त तत्कालीन परिस्थितियों का निष्पक्ष होकर मूल्यांकन एवं समीक्षा की जाएगी | गोपाल सिंह 'नेपाली 'की काव्यगत विशेषताओं के साथ उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना की अवधारणा का मूल्यांकन किया जाएगा | हिंदी राष्ट्रीय काव्यधारा की परंपरा का उद्भव एवं विकास में विभिन्न सिद्धांत का अनुशीलन किया जाएगा | 'नेपाली' ज़ी के काव्य की प्रवृत्तियाँ को सामने लाने का प्रयास रहेगा , साथ ही साथ यह भी प्रयास रहेगा की उनकी कविताओं का क्या प्रभाव पूरे जन समुदाय पर पड़ा | साथ ही साथ स्वतंत्रता प्राप्ति में उनकी कविताओं की महत्ता का क्या योगदान रहा , इन सब का मूल्यांकन किया जाएगा | इस शोध के द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति में हिंदी राष्ट्रीय काव्यधारा की कविताओं की महत्ता को प्रदर्शित करने का प्रयास किया जाएगा | स्वतंत्रता प्राप्ति में गोपाल सिंह 'नेपाली 'के साथ अन्य कवियों की रचनाओं का संक्षिप्त वर्णन किया जाएगा | आज के दौर में राष्ट्रीय काव्यधारा की कविताओं की महत्ता का अनुशीलन किया जायेगा | आन्दोलन के आरम्भ से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक हिंदी राष्ट्रीय काव्यधारा अनेक संघर्षो से जूझती रही है | स्वाधीनता के बाद हिंदी राष्ट्रीय काव्यधारा की कविता के इतिहास का एक नया दौर आरम्भ हुआ | गोपाल सिंह 'नेपाली' की कविताओं में राष्ट्रीय अस्मिता की धरोहर बनकर नयी पीढ़ी को अपने गौरवगान की कथा सुनाती रहेगी जो आज के युवा वर्ग को प्रेरित करते रहेगी |

उक्त शोध को पूर्णतः वैज्ञानिक एवं निष्पक्ष होकर उनके विविध पक्षों को सामने लाने का प्रयास किया जाएगा ।

शोध का महत्व

जीवन में कोई भी घटना अकारण नहीं होती है । हर घटना का जीवन में कुछ न कुछ महत्व अवश्य होता है | उसी प्रकार हर शोध का अपना वैचारिक महत्त्व होता है जो शोधकर्ता को नए सैद्धान्तिक पहलुओं को उजागर करने में मदद करता है । हर क्षेत्र में राजनीतिक , सामाजिक , आर्थिक , नए-नए शोध होते रहे हैं जिससे जीवन में नई संभावनाओं का विकास होता रहा है |

प्रस्तुत शोध हिंदी राष्ट्रीय काव्यधारा की परंपरा में गोपाल सिंह 'नेपाली' के योगदान का महत्व निम्नलिखित है -

1. प्रस्तुत शोध के द्वारा 'नेपाली' जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समग्र मूल्यांकन हो सकेगा साथ ही साथ उनके उदात्त विचारों का विश्लेषण किया जाएगा ।
2. 'नेपाली' के साथ ही साथ अन्य समकालीन कवियों के महत्व एवं उनकी रचनाओं की विशेषता का उल्लेख किया जाएगा |
3. 'नेपाली' के रचनाओं के माध्यम से समकालीन समाज में व्याप्त समस्याओं एवं विसंगतियों का मूल्यांकन ।
4. स्वतंत्रता प्राप्ति में गोपाल सिंह 'नेपाली' की कविताओं का योगदान का वर्णन किया जाएगा |
5. 'नेपाली' के काव्य में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण औदात्यपूर्ण विचारों का अध्ययन किया जाएगा
6. हिंदी राष्ट्रीय काव्यधारा के उद्भव एवं विकास के इतिहास का अध्ययन किया जाएगा |
7. गोपाल सिंह 'नेपाली' के काव्य में चित्रित राजनैतिक परिदृश्य का अनुशीलन किया जाएगा |

यह शोध पूर्णतया मौलिक एवं नवीन पक्षों को उद्घाटित करते हुए नये संभावनाओं को पथ- प्रदर्शित करेगा |

शोध –पद्धति

शोध पद्धति वह है जो शोध कार्यवाहन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है । जिसकी सहायता से शोध कार्य को किया जाता है । प्रस्तुत शोध कार्य में 'नेपाली' जी की प्रकाशित रचनाओं को आधार-ग्रंथ के रूप में लिया गया है । प्रस्तुत शोध-प्रबंध में निम्नलिखित शोध-प्रविधियों का प्रयोग किया गया है । -

1. 'नेपाली' जी के प्रकाशित समग्र रचनाओं का गहन अध्ययन विश्लेषण ।
2. ग्रंथालयों में उपलब्ध ग्रंथों ,शोध एवं पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री का अध्ययन ।
3. वेबसाइट समाचार पत्रों आदि में उपलब्ध सामाग्रियों का सहयोग लिया गया है ।
4. प्रस्तुत शोध के दौरान साहित्य का सामाजिक तत्व एवं सामाजिक परिवेश के साथ-साथ दार्शनिक नीतियों का अध्ययन किया जाएगा | साथ ही साथ यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि 'नेपाली' जी की कविताओं में समकालीन परिस्थितियों का वर्णन करते हुए समाज पर क्या प्रभाव पड़ा इसका मूल्यांकन किया जाएगा |
5. इस शोध में वर्णनात्मक एवं विवरणात्मक पद्धति का उपयोग किया जायेगा ।
6. इस शोध में मनोवैज्ञानिक पद्धति का उपयोग करते हुए जनसमुदाय की मन:स्थिति एवं प्रभाव को जानने का प्रयास किया जाएगा |
7. इस शोध में ऐतिहासिक पद्धति का उपयोग करते हुए तत्कालीन पृष्ठभूमि में व्याप्त राजनीतिक परिदृश्य को समझने का प्रयास किया जाएगा ।
8. इस शोध में वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग किया जाएगा |

प्रस्तुत शोध कार्य 'हिंदी राष्ट्रीय काव्यधारा की परंपरा में गोपाल सिंह 'नेपाली' का योगदान ' के मूल्यांकन की स्वतंत्रता और विस्तृत प्रविष्टि अपनाई गई है | आजकल नवंबर 2011 , अलाव (मार्च-अप्रैल) 2012 जैसे महत्वपूर्ण पत्रिकाओं ने गोपाल सिंह 'नेपाली' पर केंद्रित अपने विशेषांक भी प्रकाशित किए थे | इस सामग्री से भी अनुसंधान कार्य की सहायता ली जाएगी |

शोध की प्रेरणा

प्रेरणा दो तरह की होती है-

(1) बाह्य प्रेरणा

(2) आंतरिक प्रेरणा

बाह्य प्रेरणा का व्यक्ति परिस्थितियों से प्रेरित होता है जो कुछ समय के बाद शांत हो जाती है क्योंकि वह तत्कालीन परिस्थितियों की माँग रहती है किंतु आंतरिक प्रेरणा का व्यक्ति सदैव तत्पर रहता है ।

प्रस्तुत शोध हिंदी राष्ट्रीय काव्यधारा की परम्परा में गोपाल सिंह 'नेपाली' का योगदान मेरी आंतरिक प्रेरणा का फल है। 'नेपाली' जी के काव्य में स्वतः राष्ट्रीय भावना दिखाई देती है | स्नातक स्तर में मैंने उनकी कुछ कविताओं का रसास्वादन किया जिससे मुझे सदैव ही उनके बारे में हमेशा जानने की जिज्ञासा रहती है । जीवन जगत की समस्या का समाधान उनकी कविताओं की विशेषता रही है । वह एक सफल गीतकार एवं पत्रकार भी रहे हैं | उनके गीतों को फिल्म जगत में भी जगह मिली । वह बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति है । उनका योगदान सिर्फ साहित्य में नहीं बल्कि सिनेमा जगत में भी देखने को मिला है | स्वतंत्रता प्राप्ति में गोपाल सिंह 'नेपाली' की कविताओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है | उनकी कविताओं का प्रभाव पूरे जन समुदाय पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है | नए निर्माण के स्वर और भविष्य के प्रति मंगलमय कल्पना उनके काव्य की विशेषता है जो उन्हें विशिष्ट बनाती है |

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का उद्देश्य हिंदी के जनप्रिय हस्ताक्षर गोपाल सिंह 'नेपाली' की राष्ट्रीय चेतना युक्त रचनाओं का समग्र अनुशीलन है | 'नेपाली' उत्तर छायावाद के एक प्रमुख कवि है जिनकी कविताओं या गीतों में एक सहज राष्ट्रवाद है जो धीरे-धीरे अपना एक आकर ग्रहण करता है | इस रूप में 'नेपाली' की कविताओं का समाजशास्त्र , उत्तर छायावाद के अन्य प्रमुख कवियों से बिल्कुल भिन्न है ।

शोध कार्य की प्रांसगिकता

भूमंडलीकरण के दौर में साम्राज्यवादी शक्तियों का प्रभुत्व देखने को मिलता है । इन शक्तियों का प्रभाव देश की सामाजिक ,राजनीतिक ,आर्थिक स्थिति के साथ-ही-साथ बौद्धिक स्तर पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता हैं | यह ज्ञातव्य है कि स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रीयता के स्वर ने पूरे जनसमुदाय में एकता का भाव प्रवाहित किया था | भारत का स्वर्णिम सांस्कृतिक सौंदर्य की विशेषता ही इसे नया सौष्ठव प्रदान करती है | प्राचीन संस्कृति की धरोहर ही इसे गौरवशाली इतिहास प्रदान करती है | इस अनुपम धरोहर की रक्षा एवं विकास का दायित्व आज के युवा वर्ग का है किंतु इस औद्योगीकरण के युग में जहां विश्व का हर देश आगे बढ़ने की स्पर्धा में अपने नैतिक मूल्यों का ह्रास कर रहा है वही आज के युवा वर्ग में विदेश जाने की प्रतिस्पर्धा , प्रतिभा का पलायन की प्रवृत्ति देखने को मिलती है | देश का अनमोल रत्न विदेशों में जाकर उनकी उन्नति में सहायक सिद्ध हो रहे है | इससे देश की राजनितिक,आर्थिक, सामाजिक स्थिति पर असर दिखाई पड़ता है | वैश्वीकरण के युग में हम समृद्ध हो रहे हैं किंतु अपने राष्ट्र निर्माण एवं विकास को भूलते जा रहे हैं | आज के दौर में जहां व्यक्ति अपने ही दुखों से परेशान है उसे समाज में व्याप्त विसंगतियों, भ्रष्टाचार, शोषण, दुराचार आदि से कोई मतलब ही नहीं है । आज के समकालीन परिस्थिति के अनुरूप इस शोध प्रबंध की महत्ता आज भी प्रासंगिक है । राष्ट्रीय हित, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय विकास, राष्ट्रीय उन्नति कल भी उतनी ही महत्वपूर्ण थी आज भी , आने वाले समय में भी होगी |

प्रस्तुत शोध में हिंदी राष्ट्रीय काव्यधारा की परंपरा में गोपाल सिंह 'नेपाली' के योगदान में 'नेपाली' जी ने देश की स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी | यही कार्य आज के युवा वर्ग के कवियों से है कि वह अपनी कविताओं एवं गीतों के माध्यम से वही राष्ट्रीयता के स्वर की गूंज पूरे जनसमुदाय में फैला दे | आज के युग में शोध-प्रबंध की महत्ता अपरिहार्य है | इस शोध के द्वारा यह कोशिश रहेगी कि आज के इस वर्तमान अधोगति की स्थिति में देश का स्वर्णिम गीत गाकर राष्ट्रीय एकता की भावना को पल्लवित किया जाए |

पूर्वानुसंधान

मेरी जानकारी के अनुसार शोध कार्य के रूप में गोपाल सिंह 'नेपाली' के साहित्य में निम्नांकित अनुसंधान कार्य हो चुके हैं :

क्रमांक	विषय	शोधर्थी	वि.वि	वर्ष
१	गोपाल सिंह 'नेपाली 'की काव्य संवेदना	गणपति कोरी	रांची वि.वि. रांची	२०२३
२	गोपाल सिंह 'नेपाली' के साहित्य में अभिव्यक्त गीत की विविध आयाम	एकता जायसवाल	काशी हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस	२०२०
३	गोपाल सिंह 'नेपाली' के काव्य में समसामयिक जीवन की अभिव्यक्ति	मनोरंजन शर्मा	बाबा भीमराव अंबेडकर बिहार वि.वि. भागलपुर बिहार	२०१७

अध्यायीकरण

प्रथम अध्याय : राष्ट्रीयता की अवधारणा और स्वरूप

1.1 राष्ट्र का अर्थ एवं परिभाषा
1.2 राष्ट्रीयता की परिभाषा ,अवधारणा और विशेषताएं
1.3 राष्ट्रीयता के विविध आयाम और प्रेरक तत्व
1.4 राष्ट्रीयता का प्रयोजन

द्वितीय अध्याय : हिंदी राष्ट्रीय काव्यधारा : उद्भव और विकास

2.1 भारतेंदु पूर्व की कविताओं में राष्ट्रीयता
2.2 भारतेंदु एवं द्विवेदी युगीन काव्य में राष्ट्रीयता
2.3 छायावादयुगीन काव्य में राष्ट्रीयता
2.4 स्वतंत्र राष्ट्रीय चेतना की कविताएं

तृतीय अध्याय : गोपाल सिंह 'नेपाली'और उनका रचना-संसार

3.1 गोपाल सिंह 'नेपाली'का जीवन-वृत्त
3.2 'नेपाली' के व्यक्तित्व के विविध आयाम
3.3 गोपाल सिंह 'नेपाली'का रचना-संसार
3.4 गोपाल सिंह 'नेपाली'के राष्ट्रीय काव्य

चतुर्थ अध्याय : गोपाल सिंह 'नेपाली' के काव्य में राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति

4.1 'नेपाली' के काव्य में वर्णित राष्ट्र प्रेम का स्वरूप
4.2 'नेपाली' के काव्य में धार्मिक , सामाजिक एवं सांस्कृतिक सामंजस्य का स्वरूप
4.3 'नेपाली' के काव्य में स्वदेशानुराग एवं भाषा प्रेम की अभिव्यक्ति
4.4 'नेपाली' के काव्य में चित्रित राजनीतिक परिदृश्य

पंचम अध्याय : 'नेपाली' के समकालीन कवियों में चित्रित राष्ट्र प्रेम की अभिव्यक्ति

5.1 बालकृष्ण शर्मा नवीन
5.2 माखनलाल चतुर्वेदी
5.3 मैथिली शरण गुप्त
5.4 सुभद्रा कुमारी चौहान
5.5 श्याम नारायण पांडेय
5.6 रामधारी सिंह दिनकर
5.7 सियारामशरण गुप्त
5.8 सोहनलाल द्विवेदी व अन्य

षष्ठ अध्याय: 'नेपाली 'की शिल्प-योजना

1. भाषा
2. शिल्प
3. सादृश्य विधान , मुहावरे एवं लोकोक्तियां
4. बिम्ब , प्रतीक एवं मिथक का प्रयोग

- **उपसंहार**
- **आधार ग्रंथ**
- **सहायक ग्रंथ**
- **पत्र पत्रिकाएं**
- **वेबसाइट**
- **पूर्ववर्ती शोधार्थियों द्वारा प्रकाशित शोध पत्र**

सहायक ग्रंथ

1. सिंह, डॉक्टर कृष्णानंद, **आधुनिक हिंदी गीति काव्य और कविवर गोपाल सिंह 'नेपाली'** , प्रगतिशील प्रकाशन, दिल्ली , जनवरी 2022
2. कुमारी, डॉक्टर आरती, **गोपाल सिंह 'नेपाली' और उनका रचना संसार**, शाश्वत पब्लिकेशन, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, अगस्त 2021
3. सिंह, डॉक्टर अशोक कुमार, **अभिव्यक्ति सौंदर्य की दृष्टि से गोपाल सिंह 'नेपाली'** के काव्य का अध्ययन, अभित प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, बिहार, जनवरी 2021
4. सिंह, रघुवर, **हिंदी की राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा**, भाषा प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2021
5. आचार्य रामचंद्र शुक्ल , "**हिंदी साहित्य का इतिहास**" , श्री प्रकाशन , नई दिल्ली

पत्र पत्रिकाएं

1. ओझा, सीमा, (संपादक) आजकल, नई दिल्ली, (मासिक) अंक, नवंबर 2011
2. कृषक, राजकुमार, (संपादक) अलाव , दिल्ली, (द्वैमासिक) अंक, मार्च-अप्रैल 2012
3. आजकल, सीमा ओझा (संपादक), मासिक , नई दिल्ली, नवम्बर 2011

नोट :-

यह शोध की प्रस्तावित रूप रेखा है | जैसा की शोध एक सतत प्रक्रिया है तथा उसके मध्य नाना प्रकार के उद्वेलन संभव हैं | इसीलिए इसमें किसी प्रकार का आवश्यक संशोधन अपेक्षित होगा |